



HargharPanditji

॥ श्री यमुना जी की व्रत कथा ॥
॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कालिन्द्यै देव्यै नमः ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री यमुना जी की व्रत कथा ॥

मंगलाचरण

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ ॐ श्रीकृष्णप्रियायै यमुनायै नमः ॥

एक समय की बात है। सूर्यदेव की दिव्य पत्नी संज्ञा से दो तेजस्वी संतानें उत्पन्न हुईं—पुत्र धर्मराज यम और पुत्री यमुना। यमुना अपने स्वभाव से अत्यंत पवित्र, करुणामयी और भक्तवत्सला थीं। उनके निर्मल जल में स्नान करने मात्र से मनुष्य के पाप नष्ट होते हैं और भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति का सौभाग्य प्राप्त होता है।

यमुना अपने भाई यमराज से अत्यंत स्नेह करती थीं। वे बार-बार अपने भाई को अपने घर भोजन के लिए आमंत्रित करतीं, परंतु यमराज अपने न्यायकार्य में इतने व्यस्त रहते कि समय नहीं निकाल पाते। यमुना फिर भी धैर्य और प्रेम के साथ उनकी प्रतीक्षा करती रहीं।

एक दिन कार्तिक शुक्ल द्वितीया के पावन अवसर पर यमराज ने अपनी बहन यमुना के घर जाने का निश्चय किया। यमुना ने बड़े प्रेम से उनका स्वागत किया। उन्होंने भाई के मस्तक पर तिलक लगाया, आरती उतारी, पुष्प अर्पित किए और अनेक प्रकार के व्यंजनों से उनका सत्कार किया। यमराज अपनी बहन के प्रेम और सेवा से अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा—
"हे बहन! आज मैं तुमसे एक वर माँगने को कहता हूँ। जो इच्छा हो, निःसंकोच कहो।"

यमुना ने विनम्रता से कहा—
"हे भ्राता! मेरी यही इच्छा है कि जो भी भाई-बहन आज के दिन श्रद्धा और प्रेम से मिलें, बहन अपने भाई का तिलक करे, और जो भक्त श्रद्धापूर्वक मेरे जल में स्नान करके मेरा पूजन करें, उन्हें आपके लोक का भय न रहे तथा उन्हें सुख, समृद्धि, दीर्घायु और अंत में भगवान श्रीहरि के धाम की प्राप्ति हो।"

यमराज ने प्रसन्न होकर कहा—"तथास्तु। आज से जो मनुष्य कार्तिक शुक्ल द्वितीया के दिन यमुना स्नान करेगा, यमुना जी का पूजन करेगा और बहन के हाथ से तिलक ग्रहण करेगा, उसे अकाल मृत्यु का भय नहीं रहेगा। मेरे दूत भी उसका सम्मान करेंगे और उसे शुभ गति प्राप्त होगी।" समय बीतने पर भगवान श्रीकृष्ण ने ब्रजभूमि में अपनी दिव्य लीलाएँ कीं। उन्होंने यमुना के तट पर गोचारण किया, गोप-गोपियों के साथ रास-विलास किया तथा कालिय नाग का दमन कर यमुना के जल को पुनः निर्मल और पवित्र बनाया। तभी से यमुना केवल एक नदी नहीं, बल्कि श्रीकृष्ण की परम प्रिय देवी के रूप में पूजित हुई।

एक नगर में एक निर्धन ब्राह्मण रहता था। वह प्रतिवर्ष यमुना जयंती और कार्तिक मास में यमुना जी का व्रत करता, उनके नाम का दीपदान करता, "ॐ यं यमुनायै नमः" मंत्र का जप करता और यथाशक्ति दान देता। उसकी आर्थिक स्थिति साधारण थी, फिर भी उसने कभी व्रत और श्रद्धा नहीं छोड़ी।

कुछ समय बाद यमुना महारानी की कृपा से उसके घर में सुख-समृद्धि बढ़ने लगी। परिवार में शांति आई, रोग दूर हुए और भगवान श्रीकृष्ण के प्रति उसकी भक्ति दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई। उसने अनुभव किया कि सच्ची समृद्धि धन से नहीं, बल्कि ईश्वर की कृपा और संतोष से प्राप्त होती है।

तब से यह मान्यता प्रचलित हुई कि जो श्रद्धापूर्वक यमुना जी का व्रत करता है, उनकी कथा सुनता या सुनाता है, यथाशक्ति दान-पुण्य करता है तथा नदी की स्वच्छता और संरक्षण का संकल्प लेता है, उस पर यमुना महारानी और भगवान श्रीकृष्ण की विशेष कृपा बनी रहती है। उसके जीवन के कष्ट कम होते हैं, परिवार में सुख-शांति आती है और अंततः उसे उत्तम गति प्राप्त होती है।

व्रत का संदेश

यमुना जी का व्रत केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं है। यह हमें पवित्रता, प्रेम, भाई-बहन के स्नेह, प्रकृति और नदियों के संरक्षण, सेवा, दया तथा श्रीराधा-कृष्ण की निष्काम भक्ति का संदेश देता है। जो इन आदर्शों को जीवन में अपनाता है, वही यमुना महारानी की सच्ची कृपा का अधिकारी बनता है।

व्रत प्रार्थना

हे श्री यमुना महारानी!

आप श्रीकृष्ण की परम प्रिय, सूर्यदेव की दिव्य पुत्री और धर्मराज यम की भगिनी हैं। हमारी भक्ति को स्वीकार करें। हमारे पापों, दुःखों, रोगों और भय का नाश करें। हमारे परिवार में प्रेम, सुख, शांति और समृद्धि बनाए रखें तथा हमें सदैव श्रीराधा-कृष्ण के चरणों की निष्काम भक्ति प्रदान करें।

॥ ॐ यं यमुनायै नमः ॥

॥ जय श्री यमुना महारानी ॥

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"